गोस्वामी तुलसीदास की भक्ति भावना : 'श्रीरामचरितमानस और विनय पत्रिका के संदर्भ में'

***अक्षांश भारद्वाज**

प्रस्तावना :- गोस्वामी तुलसीदास का जन्म सनाढ्य ब्राह्मण परिवार में पिता आत्माराम और माता हुलसी के यहाँ राजापुर या सोरों में हुआ था।बालपन में माता का निधन होने पर चिराई ने 4 वर्ष तक पालन किया।चिराई की मृत्यु होने पर रामबोला तुलसीदास अनाथ हो गये।तुलसीदास को पत्नी रत्नावली ने फटकारते हुए कहा कि-

"अस्थि चर्म मय देह मम तामे जैसी प्रीत।

तैसी जो श्रीराम महँ होती ना भवभीत।।" (1)

गोस्वामी तुलसीदास ने 25 वर्ष तक वेद पुराण व अन्य ग्रंथों का अध्ययन किया।गोस्वामी तुलसीदास ने कई स्थानों पर पर्यटन व धार्मिक यात्राएँ कीं।कहा जाता है कि चित्रकूट में प्रेत ने उन्हें हनुमानजी के बारे में बताया और हनुमानजी ने राम के बारे में।चित्रकूट में रास्ते पर तुलसीदास को दो सुन्दर युवक घोड़े पर सवार होते हुए दिखे,किन्तु तुलसीदास उन्हें नहीं पहचान पाये।हनुमान ने फिर कहा कि कल प्रातः चित्रकूट के घाट पर पुनः राम के दर्शन होंगे।दूसरे दिन प्रातः तुलसीदास को घाट पर दो सुन्दर-सुन्दर बालक दिखाई दिये। किन्तु तुलसी ने उन्हें भी नहीं पहचाना। इसके पश्चात् भगवान शंकर ने तुलसी को स्वप्न में निर्देश दिए कि तुम तुम्हारी अवधी में 'रामचरितमानस' लिखो । तत्पश्चात् तुलसी ने अयोध्या में सरयू नदी के तट पर बैठकर दो वर्ष,सात माह,छब्बीस दिन में 'रामचरितमानस' की रचना की। तुलसी ने मानस की रचना के बाद काशी आकर विश्वनाथ मंदिर में प्रथम प्रति भेंट की।मानस छः शास्त्रों,18 पुराणों का सार है।

"**नाना पुराण निगमागम सम्मतं यद् रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि।**" (2)

मानस की रचना के संबंध में तुलसी का कथन है कि उन्हें आराध्य राम ने स्वप्न दर्शन देकर उनसे रामचरितमानस लिखवाया है। मानस के संबंध में उन्होंने यह भी कहा कि भगवान शंकर ने पार्वती को जो रामकथा सुनाई। वही कथा काकभुसुंडी गरुड़जी को कहते हैं- उसी पावन रामकथा को मैंने लिपिबद्ध किया।मानस में तुलसीदास का बड़प्पन देखिये कि वे बार-बार कहते हैं कि मैं तो मूढ़ अज्ञानी,अल्पबुद्धि हूँ।मैं वेद पुराण,आगम-निगम,दर्शन रहस्य, भक्ति के संबंध में कुछ नहीं जानता हूँ। मैं तो केवल प्रभु राम के चरित्र को ही लिख पाया हूँ।

"निज बुधि बल भरोस मोहि नाहीं।

ताते विनय करऊँ सब पाहीं।।

करन चहउँ रघुपति गुन गाहा।

लघु मति मोरि चरित अवगाहा।।"(3)

"कबित बिबेक एक नहिं मोरें।

सत्य कहउँ लिखि कागद कोरें।" (4)

गोस्वामी तुलसीदास की भक्ति श्रीराम से प्रेम करना और राग एवं क्रोध को जीतकर नीति के मार्ग पर चलना है। उनके अनुसार जिन के वचन सत्य होते हैं,मन निर्मल होता है और क्रिया कपट रहित होती है,ऐसे राम के भक्तों को कलयुग भी धोखा नहीं दे सकता। गोस्वामी जी जन्म-जन्मांतर तक राम से ही नाता जोड़ना चाहते हैं और राम से प्रेम के कारण ही प्रेम चाहते हैं।

"नातो नाते राम कें राम सनेहँ सनेहु।

तुलसी माँगत जोरि कर जनम जनम सिव देहु ॥" (5)

उद्देश्य :- भारतीय हिन्दू समाज की रामचरितमानस में अपार श्रद्धा है। लोक जीवन में तुलसी की लोकप्रियता का आधार उनका रामचरितमानस ही है। उत्तरी भारत विशेषकर हिन्दी क्षेत्र में कोई हिन्दू घर ऐसा नहीं मिलेगा जिसमें 'रामचरितमानस' या उसके किसी पात्र की चर्चा किसी न किसी प्रसंग में न चलती हो। बच्चे से लेकर बूढ़े तक,छोटे से लेकर बड़े तक,गरीब से लेकर अमीर तक सबके मन में राम, लक्ष्मण,सीता,हनुमान की छवि हमेशा उपस्थित रहती है।यही नहीं बुद्धिवादी वर्ग में भी धर्म, दर्शन और काव्य तीनों दृष्टि में यह ग्रंथ हिन्दी की सर्वोत्कृष्ट रचना के रूप में स्वीकार किया जाता है।

डॉ. ग्रियर्सन का कथन है कि- "बुद्धदेव के बाद भारत में सबसे बड़े लोकनायक तुलसीदास थे।"(6) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार,"यदि कोई पूछे कि जनता के हृदय पर सबसे अधिक अधिकार रखने वाले हिन्दी का सबसे बड़ा कवि कौन है तो उसका एकमात्र यही उत्तर ठीक हो सकता है कि भारत हृदय, भारती कंठ भक्त चूड़ामणि गोस्वामी तुलसीदास ।"(7)

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के मतानुसार,"उस युग में किसी को तुलसी के समान सूक्ष्मदर्शिनी और सार ग्रहिणी दृष्टि

नहीं मिली थी।"(8) डॉ.रामकुमार वर्मा ने हिन्दी रामकथा साहित्य में तुलसीदास का एकाधिकार माना है।तुलसी की प्रतिभा और काव्य कला इतनी उत्कृष्ट प्रमाणित हुई कि उनके बाद किसी भी कवि की रामचरित संबंधी रचना उनके मानस की समानता में प्रसिद्धि प्राप्त नहीं कर सकी है। मानस के सामने कोई भी प्रबंध काव्य तुलना की दृष्टि से नहीं देखा गया। डॉ. उदयभानुसिंह के कथनानुसार,"तुलसीदास महाकवि थे। वे काव्य स्रष्टा और जीवन द्रष्टा थे। वे प्रबंधकार थे। उन्होंने महाकाव्य,निबंध,मंगल गीत लिखे। वे मुक्तककार भी थे,उन्होंने गीति मुक्तक लिखे,अगीत मुक्तक लिखे।सौन्दर्य और मंगल का,प्रेय और श्रेय का,कवित्व और दर्शन का असाधारण सामंजस्य उनके साहित्य की महती विशेषता है।"(9) शुक्ल के अनुसार,"यह एक कवि ही हिंदी की प्रौढ़ साहित्यिक भाषा सिद्ध करने के लिए काफी है।इनकी वाणी की पहुँच मनुष्य के सारे व्यवहारों तक है।"(10)

अन्य समकालीन कवियों की तुलना में तुलसीदास अधिक लोकप्रिय हैं।इसका कारण आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखते हैं कि,"रामचरितमानस शुरू से आखिर तक समन्वय का काव्य है।.....भारत का लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय करने का अपार हृदय लेकर आया हो। बुद्धदेव समन्वयकारी थे,गीता में समन्वयकारी चेष्टा है और तुलसीदास भी समन्वयकारी थे।..... उनका सारा काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है।उसमें केवल लोक एवं शास्त्र का ही समन्वय नहीं है।"(11)उनकी रचनाओं में पग-पग पर लोक तथा शास्त्र का, गृहस्थ तथा वैराग का,भक्ति तथा ज्ञान का,निर्गुण तथा सगुण का,कथा तथा तत्वज्ञान का,ब्राह्मण तथा चाण्डाल का और पांडित्य तथा अपांडित्य का समन्वय देखने को मिलता है। तुलसी की लोकप्रियता का रहस्य यह भी है कि वे मानव जीवन मूल्यों के अधिकाधिक रूपों का उद्‌घाटन कर पाये हैं।उनकी दृष्टि मानव-जीवन के प्रत्येक पक्ष पर पड़ी है।उनके समस्त साहित्य में व्यक्तिगत,पारिवारिक तथा सामाजिक जीवन के प्रत्येक भाग के चित्र देखने को मिलते हैं। इसीलिए आचार्य रामचंद्र शुक्ल लिखते हैं कि "गोस्वामी जी की भक्ति पद्धति की सबसे बड़ी विशेषता है उनकी सर्वांगपूर्णता। जीवन के किसी पक्ष को सर्वथा छोड़कर वह नहीं चलती है। सब पक्षों के साथ उसका सामंजस्य है, ना उनका कर्म या धर्म से विरोध है,ना ज्ञान से।धर्म तो उसका नित्य लक्षण है।तुलसी की भक्ति को धर्म और ज्ञान दोनों की रसानुभूति कह सकते हैं।"(12)

यही कारण है कि आज भी प्रत्येक वर्ग के नर-नारी,जीवन के महत्त्वपूर्ण प्रसंगों पर आदर के साथ रामचरित के प्रसंगों को स्मरण करते हैं।

विनय पत्रिका में रामचरित नहीं, रामभक्ति का वर्णन है।विनय पत्रिका में तुलसी ने रामचरित को राम की भक्ति की

अभिव्यक्ति के साधन के रूप में स्वीकार किया गया है। इस दृष्टि से विनय पत्रिका का महत्त्व और अधिक बढ़ जाता है।रामचरितमानस में जो कार्य कवि को परोक्ष रूप में करने के लिए बाध्य होना पड़ा। (प्रबंधात्मकता के निर्वाह के आग्रह के कारण) वह कार्य विनय पत्रिका में वह स्वतंत्र रूप से सम्पन्न कर पाये हैं।जहाँ तक भक्ति भावना का प्रश्न है,भक्ति भावना की अभिव्यक्ति और अध्ययन की दृष्टि से 'विनय पत्रिका' रामचरितमानस की अपेक्षा कहीं अधिक उपयोगी बन पड़ा है। वास्तविक रूप से गोस्वामी तुलसीदास को अपनी धर्म भावना के उन्मुक्त प्रकाशन का जो स्वर्ण अवसर विनय पत्रिका में प्राप्त हुआ वह उसे अन्यत्र नहीं मिल सका है।विनय पत्रिका का प्रत्येक पद राम-भक्ति को समर्पित है।तुलसी की भक्ति दास्य भाव की भक्ति है।

गोस्वामी तुलसीदास की इसी दास्य भाव की भक्ति भावना को विनय पत्रिका के संदर्भ में हम समझेंगे।

"राम सों बड़ो है कौन,मो सों कौन छोटो?

राम सों खरो है कौन,मो सों कौन खोटो?" (13)

विषय वस्तु का विश्लेषण:- काव्यात्मकता की दृष्टि से 'रामचरितमानस' श्रेष्ठ ग्रन्थ है।लेकिन विनय पत्रिक कम अंकनीय नहीं है। शुक्लजी के अनुसार,"गोस्वामी जी की विनय पत्रिका भक्ति रस के नाना वादों से भरी हुई है यह हिंदी साहित्य का अनमोल रत्न है।"(14) लाला भगवानदीन और डॉ.बच्चन सिंह ने गोस्वामी तुलसीदास को रूपकों का बादशाह जबकि डॉ.उदयभानु सिंह ने उत्प्रेक्षाओं का बादशाह तथा शुक्ल ने गोस्वामी जी को अनुप्रास का बादशाह कहा है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार,"तुलसीदास जी उत्तर भारत की समग्र जनता के हृदय मंदिर में पूर्ण प्रेम प्रतिष्ठा के साथ विराज रहे हैं।भारतीय जनता का प्रतिनिधि कवि यदि किसी को कह सकते हैं तो इन्हीं महानुभाव को।"(15)

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के मत अनुसार,"तुलसी कवि थे,भक्त थे,पंडित,सुधारक थे,लोक नायक थे और भविष्य के स्रष्टा भी।इन रूपों में उनका कोई भी रूप किसी से घटकर नहीं था।(16)

विनय पत्रिका वस्तुतः मुक्तक शैली में रचा गया ग्रन्थ है। इसमें 279 पद हैं,इन पदों की रचना विभिन्न रागों में हुई है।इन राग रागिनियों के नाम निम्नानुसार है- धनाश्री, रामकली, बसंत, मारु, भैरव, कान्हरा, सारंग, गौरी, दण्डक,केदार,जयश्री,विभास, ललित,टोड़ी,बिलास,सूहो बिलावल,नट,मल्हार,सोरठ,आसावरी तथा भैरवी आदि।

विनय पत्रिका की पृष्ठभूमि के सम्बन्ध में रोचक कथानक इस प्रकार है कि कलिकाल से पीड़ित तुलसी अपने आराध्य

देव भगवान राम के दरबार में अर्जी के लिए 'पत्रिका'भेजते हैं।प्रारंभ में विभिन्न देवी-देवताओं की स्तुति की गई है।65वें पद से 'पत्रिका' का विषय प्रारंभ होता है।उसके अन्तर्गत कवि अपने आराध्य देव की महत्ता और स्वयं की लघुता को दर्शाता है।विनय पत्रिका के 277वें पद तक यह क्रम चलता है।277वें पद में वह भगवान राम से उनकी पत्रिका पढ़ने की प्रार्थना करता है।278वें पद में वह भगवान राम के पार्षदों अर्थात् हनुमान,भरत,लक्ष्मण,शत्रुघ्न से अवसर पर उनकी बात सँभालने की प्रार्थना करते हैं।279वें पद में राम के भक्त तुलसी की विनय पत्रिका को स्वीकार करने का वर्णन हुआ है।यहीं पर विनय पत्रिका समाप्त होती है।

विनय पत्रिका के आरम्भ के पद 1 से 64 वें पद तक विभिन्न देवी-देवताओं जो उसी राम-रूप परब्रह्म की विभिन्न शक्तियाँ हैं, की स्तुतियाँ हैं।इन पदों में यह दर्शाया गया है कि ब्रह्म राम की शक्ति हैं: -

"**विश्व-विख्यात,विश्वेश, विश्वायतन,विश्वमरजाद, व्यालारिगामी।**

ब्रह्म,वरदेश,वागीश,व्यापक, विमल,विपुल,बलवान, निर्वानस्वामी॥"(17)

राम सगुण और निर्गुण दोनों हैं। उनका अवतार लेने का प्रमुख कारण उनकी भक्तवत्सलता है। श्री राम का बाना ही गरीबों को निहाल कर देना है।वेद,पुराण, शिव,सुखदेव इत्यादि भी यही गाते हैं।उनके नाम का प्रभाव प्रत्यक्ष है।ध्रुव,प्रल्हाद, विभीषण,सुग्रीव,जटायु,सुदामा इन सब को भगवान ने इस लोक में सुंदर यश और परलोक में सद्गति दी।

"**बिरद गरीबनवाज रामको।**

गावत बेद-पुरान,संभु-सुक,प्रगट प्रभाउ नामको ॥

ध्रुव,प्रह्लाद,बिभीषन,कपिपति, जड़,पतंग,पांडव,सुदामको।

लोक सुजस परलोक सुगति, इन्हमें को है राम कामको ॥" (18)

जीव उसी ब्रह्म राम का अंश है। मायावश हो जाने के कारण उसे अपना वास्तविक रूप विस्मृत हो गया है।राम ही मायापति हैं और वे ही माया से मुक्त कर सकते हैं।

"**तुलसीदास यह जीव मोह रजु जोई बांध्यो सोई छोरे।**"(19)

उनका मानना था कि केवल हरिकृपा से ही हरि भक्ति प्राप्त हो सकती है,दूसरे साधन निरर्थक हैं।राम सभी राग-द्वेष आदि द्वंद्व तथा दुखों के नाशक,इंद्रियों पर नियंत्रण करने वाले और आनंद की वर्षा करने वाले हैं।जड़ चेतन जगत सब हरि का रूप है वे सर्वव्यापी और नित्य हैं।

"ऐसी आरती राम रघुबीरकी करहि मन ।

हरन दुखदुंदु गोबिंद आनन्दघन।।" (20)

राम नाम दिन रात जपने से ही जीव को मुक्ति मिल सकती है। इसके लिए सतत् अभ्यास,आत्म संयम की आवश्यकता होती है। इसलिये सच्चा राम भक्त निष्काम अनुराग के अलावा किसी अन्य वस्तु पदार्थ की कामना नहीं करता है।संसार के जितने भी संबंध हैं,उन सभी का राम के नाते से ही निर्वहन करना चाहिए।जो राम विमुख है,उनका परित्याग करना ही श्रेयस्कर है:

"जाके प्रिय न राम वैदेही।

सो छांड़िये कोटि बैरी सम, जदपि परम सनेही।।"(21)

तुलसी की भक्ति सेवक-सेव्य या दास्य भाव की भक्ति है। जिसमें अपने दैन्य की अनुभूति ही सब कुछ होती है। रामचरितमानस में दास्य भाव की भक्ति का प्रतिपादन हुआ है किन्तु विनय पत्रिका में उसके तीव्रतर रूप को अभिव्यक्ति प्राप्त हुई है।भक्त प्रवर श्री बैजनाथ ने तुलसी की विनय की सात भूमिकाएँ मानी हैं जो क्रमशः दीनता,मानकर्मता,भय दर्शना, भर्त्सना,आश्वासन,मनोराज्य, विचारणा हैं। इन सातों भक्ति विनय का सार क्रमशः इस प्रकार है-भक्त अपने को तुच्छ मानकर, अपना अभिमान त्यागकर,अपने मन को भय दिखाकर,मन को बुरा-भला कहकर,अपने आराध्य देव पर पूर्ण रूप से निर्भर रहकर,उस रहनि की ओर आकर्षित हो,जिसे भक्त आवश्यक समझता है और संसार की असारता को उसे भक्ति और समझकर भगवत् प्राप्ति का प्रयत्न करता है।

"केशव!कहि न जाइ का कहिये।

देखत तव रचना विचित्र अति,समुझि मनहिं मन रहिये ।।" (22)

इसमें मायावाद आदि सब दार्शनिक मतों को अपूर्ण कहकर केवल उनके द्वारा आत्मानुभूति संभव कही गई है।सच्ची भक्ति से ही क्रमशः वह व्यवस्था प्राप्त हो सकती है, जिससे जीव का कल्याण होता है।जहाँ तक समझ में आता है,गोस्वामी जी का मतलब यह नहीं जान पड़ता कि यह सब मत बिल्कुल असत्य हैं।कहने का तात्पर्य समझ पड़ता है कि सब पूर्ण सत्य नहीं है अपितु अंशतः सत्य हैं।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि विनय पत्रिका में भक्ति रस का जो पूर्ण परिपाक हुआ है। वैसा अन्यत्र दृष्टिगत नहीं होता है।

परिणाम:

भक्तिकाल में जितने भी सगुण-निर्गुण कवि संत हुए हैं उनमें तुलसीदास संत शिरोमणि हैं।उनके साहित्य की भाषा व काव्य के शिल्प सहज बोधगम्य होकर आम जन जीवन की बोलचाल की भाषा है जो श्रोता, पाठक को आसानी से हृदयंगम एवं आत्मसात हो जाती है।यही कारण है कि तुलसी का सम्पूर्ण काव्य जिसमे विशेषतः 'रामचरितमानस' शहर, गाँव,कस्बों,चौपालों,मंदिरों में अखंड रामायण पाठ के रूप में सर्वाधिक व्यावहारिक व प्रचलित होकर जन-जन के कंठ में रच बस गया है जिसका प्रभाव आगामी कई शताब्दियों तक निश्चित रूप से रहेगा।जिसका सामाजिक,धार्मिक प्रभाव सतयुग,त्रेता,द्वापर से अधिक कलयुग में महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष :- गोस्वामी तुलसीदास का भक्ति मार्ग एक देश के आधार पर स्थित नहीं है।यह एक अंगदर्शी नहीं है।यह हमारे हृदय को ऐसा नहीं करना चाहता कि हम केवल व्रत उपवास करने वालों और उपदेश करने वालों पर ही श्रद्धा रखें अपितु जो लोग संसार के पदार्थों का उचित उपयोग करके अपने विशाल भुजाओं से रण क्षेत्र में अत्याचारों का दमन करते हैं या अपनी अंतर्दृष्टि की साधना और शारीरिक अध्यवसाय के बल से मनुष्य जाति के ज्ञान की वृद्धि करते हैं,उनके प्रति उदासीन न रहें।गोस्वामी जी की राम भक्ति वह पदार्थ है जिससे जीवन में शक्ति,सरसता,प्रफुल्लता,पवित्रता सब कुछ प्राप्त हो सकती है ।आलंबन की महत्त्व भावना से प्रेरित करने के अतिरिक्त भक्ति के और जितने अंग हैं,भक्ति के कारण अंतःकरण को जो और शुभ वृत्तियां प्राप्त होती हैं,सबकी अभिव्यंजना विनय पत्रिका के भीतर हम पाते हैं।राम में सौंदर्य,शक्ति और शील तीनों की चरम अभिव्यक्ति एक साथ समन्वित होकर मनुष्य के संपूर्ण हृदय को(उसके किसी एक ही अंश को नहीं)आकर्षित कर लेती है।गोस्वामी जी के भक्ति क्षेत्र में शील,शक्ति और सौंदर्य तीनों की प्रतिष्ठा होने के कारण मनुष्य की संपूर्ण रागात्मिकप्रकृति के परिष्कार और प्रसार के लिए मैदान पड़ा हुआ है।जिस प्रकार लोक व्यवहार से अपने को अलग करके आत्मकल्याण की ओर अग्रसर होने वाले काम,क्रोध आदि शत्रुओं से बहुत दूर रहने का मार्ग पा सकते हैं,उसी प्रकार लोक व्यवहार में मग्न रहने वाले अपने भिन्न-भिन्न कर्त्तव्यों के भीतर ही आनंद की ज्योति पा सकते हैं।

सारांश :- विनय पत्रिका में रामचरित नहीं, रामभक्तिका वर्णन है।रामचरितमानस में भी तुलसी ने रामचरित को राम की भक्ति की अभिव्यक्ति के साधन के रूप में स्वीकार किया गया है। इस दृष्टि से विनय पत्रिका का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। रामचरितमानस में जो कार्य कवि को परोक्ष रूप में करने के लिए बाध्य होना पड़ा।(प्रबंधात्मकता के

निर्वाह के आग्रह के कारण) वह कार्य विनय पत्रिका में वह स्वतंत्रत रूप से सम्पन्न कर पाये हैं। जहाँ तक भक्ति भावना का प्रश्न है,भक्ति भावना की अभिव्यक्ति और अध्ययन की दृष्टि से 'विनय पत्रिका' रामचरितमानस की अपेक्षा कहीं अधिक उपयोगी बन पड़ा है। वास्तविक रूप से गोस्वामी तुलसीदास अपनी धर्म भावना के उन्मुक्त प्रकाशन का जो स्वर्ण अवसर विनय पत्रिका में प्राप्त हुआ वह उसे अन्यत्र नहीं मिल सका है। विनय पत्रिका का प्रत्येक पद राम भक्ति को समर्पित है। तुलसी की भक्ति दास्य भाव की भक्ति है।

यदि विश्व साहित्य आकाश में सबसे लोकप्रिय भक्त कवि जिसका सबसे अधिक कई शतकों से एक समान सम्मान व प्रभाव है तो उसमें उनके परम आराध्य मर्यादा पुरुषोत्तम राम के समान ही गोस्वामी तुलसीदास का स्थान सर्वोच्च है।

***शोधार्थी,**
हिंदी विभाग
राजकीय महाविद्यालय, करौली
सम्बद्ध:- कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

संदर्भ :-

1. हिंदी साहित्य का इतिहास-आचार्य रामचंद्र शुक्ल पृष्ठ 106
2. श्रीरामचरितमानस 1/7
3. श्रीरामचरितमानस 1/दोहा 7/2-3
4. श्रीरामचरितमानस 1/8/6
5. दोहावली-गोस्वामी तुलसीदास,पृष्ठ 31
6. नोट्स ऑन तुलसीदास-डॉ. ग्रियर्सन
7. हिंदी साहित्य का इतिहास-आ.रामचंद्र शुक्ल
8. हिंदी साहित्य:उद्भव और विकास-आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी
9. हिंदी साहित्य का इतिहास-आ. रामचंद्र शुक्ल
10. तुलसी(आलोचना)-डॉ. उदयभानु सिंह
11. हिंदी साहित्य का आदिकाल-आ.हजारी प्रसाद द्विवेदी
12 हिंदी साहित्य का इतिहास-आ. रामचंद्र शुक्ल

13. विनय पत्रिका-पद संख्या 72-2
14. विनय पत्रिका का परिचय (सं. वियोगी हरि) -आ. रामचंद्र शुक्ल
15. हिंदी साहित्य का इतिहास-आ. रामचंद्र शुक्ल
16. हिंदी साहित्य:उद्भव एवं विकास-आ.हजारी प्रसाद द्विवेदी
17. विनय पत्रिका-गोस्वामी तुलसीदास,पद संख्या 54-1
18. वही,पद संख्या 99-1,2
19 वही,पद संख्या 102-5
20. वही,पद संख्या 47-1
21. वही,पद संख्या 174-1
22. वही,पद संख्या 111-1